www.anvikshikijournal.com

ISSN 0973-9777
वर्ष - 7 अंक - 2
मार्च-अप्रैल 2013
GISI Impact Factor 0.2310

वर्ष - 7 अंक - 2 मार्च-अप्रैल 2013

भारतीय शोध पत्रिका

आन्वीक्षिकी

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.
एम.पी.ए.एस.वी.ओ. एवं आन्वीक्षिकी
सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित

मनीषा प्रकाशन

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रधान सम्पादिका

डॉ. मनीषा शुक्ला,maneeshashukla76@rediffmail.com

पुनर्निरीक्षक संपादक

प्रो. विभा रानी दुबे, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उ.प्र.,भारत

डॉ. नागेन्द्र नारायण मिश्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद,उ.प्र.,भारत

सम्पादक

डॉ. महेन्द्र शुक्ल, डॉ. अंशुमाला मिश्रा

सम्पादक मण्डल

डॉ. एस. पी. उपाध्याय, डॉ. अनीता सिंह, डॉ. विशाल अशोक आहेर, ज्योति प्रकाश, डॉ. पद्मिनी रविन्द्रनाथ, डॉ. (श्रीमती) विभा चतुर्वेदी, डॉ. नीलमणि प्रसाद सिंह, डॉ. प्रेम चन्द्र यादव, डॉ. रामनिवास पटेल, डॉ. मुकुल खण्डेलवाल,डॉ. एच. एन. शर्मा, मनोज कुमार सिंह, सरिता वर्मा, उमाशंकर राम, अवनीश शुक्ला, विजयलक्ष्मी, कविता, विनय कुमार पटेल, अर्चना बलवीर, खगेश नाथ गर्ग, मुन्ना लाल गुप्ता

अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल

रेव डोडामगोडा सुमनासार (श्रीलंका), वेन केन्डागेले सुमनारांसी थेरो (श्रीलंका), रेव टी धम्मारतना (श्रीलंका), पी.त्रिराची सोडामा (श्रीलंका), फ्रा च्युतिदेश सैन्सोम्बट (बैंकाक,थाईलैंड), फ्रा बूनसर्मस्त्रिथा (थाईलैंड), डॉ. सीताराम बहादुर थापा (नेपाल), मोहम्मद सौरजाई (जाबोल, ईरान), माजिद करीमजादेह (ईराक), डॉ. अहमद रेजा केईखाय फरजानेह (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद जारेई (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद मोजटाबा केयाहफरजानेह (जाहेडान, ईरान),डॉ. होसैन जेनाबदी (सिस्तान एवं बलूचिस्तान, ईरान), मोहम्मद जावेद केयाह फरजानेह (जाबोल, ईरान)

प्रबन्धक

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

सारांश एवं सूचीपत्र

मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका सूचीपत्र वाराणसी, सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी सूचीपत्र दिल्ली, डी.के.पब्लिकेशन सूचीपत्र दिल्ली, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड इन्फारमेशन रिसोर्स सूचीपत्र दिल्ली, नोएडा कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजूकेशन सूचीपत्र गौतमबुद्ध नगर

पाठकों से

आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका प्रत्येक दो माह (जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर) पर एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण वाराणसी उ.प्र. भारत द्वारा प्रकाशित की जाती है। एक वर्ष में आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका 6 भाग हिन्दी एवं 6 भाग अंग्रेजी एवं 3 अतिरिक्तांकों के भाग में प्रकाशित की जाती है। डॉक खर्च दर के सम्बन्ध में जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

वार्षिक पाठक मूल्य दर

संस्थागत : भारतीय 4,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 1200+51/- डाक शुल्क,वैदेशिक : 6000+डॉक खर्च,एक प्रति 1000+डाक शुल्क
व्यक्तिगत : 3,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 500+51 डाक शुल्क सहित,वैदेशिक 5000+डाक शुल्क,एक प्रति 1000+डाक शुल्क

विज्ञापन एवं निवेदन

विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रधान सम्पादिका के पते पर संपर्क करें। आन्वीक्षिकी एक स्ववित्तपोषित पत्रिका है,अत: किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा। कृपया अपनी सहयोग राशि चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

सभी पत्राचार निम्नलिखित पते पर ही प्रेषित करें-

बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया,लंका वाराणसी उ.प्र. भारत,पिन कोड 221005 मोबाइल नं. 09935784387, टेलीफोन नं. 0542-2310539.,E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com,www.anvikshikijournal.com

मिलने का समय : 3-5 दिन में(रविवार अवकाश)

पत्रिका संयोजन

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

प्रकाशन

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष–7 अंक–2 मार्च–2013

शोध प्रपत्र

गीता एवं छान्दोग्योपनिषद् में कर्मवाद -डॉ. मनीषा शुक्ला 1-3
वैदिक वाङ्मय का एकेश्वरवादी स्वरुप ''रूद्र-शिव'' के संदर्भ में -डॉ. रामानुज सिंह 4-6

महाकवि भास के रामायणाश्रित रूपकों में वर्णन कौशल -डॉ. सपना भारती 7-9
अद्वैत वेदान्त की साहित्यिक एवं दार्शनिक परम्परा -कु. नन्दिनी सिंह 10-12

वेदों में वर्णित संस्कृति, सभ्यता एवं परम्परा -डॉ. बी. जे. पटेल एवं प्रा. नयना सी. पटेल 13-19
महाकवि भास के रामायणाश्रित रूपकों में भाव पक्ष -डॉ. सपना भारती 20-27

मानवीय जीवन में साध्य एवं साधन : श्रीमद्भगवद्गीता के विशेष संदर्भ में -सुषमा देवी 28-30
काशी की गंगा -डॉ. मुकुल खण्डेलवाल 31-33

उत्तराखण्ड राज्य निर्माण आन्दोलन : पत्र पत्रिकाओं की पक्षधरता -डॉ. निशा यादव 34-36
भूमण्डलीकरण के दौर में मुंशी प्रेमचंद्र का चिंतन -डॉ. प्रभा दीक्षित 37-39

'उर्वशी' में प्रेम-संवेदना -डॉ. बी. जे. पटेल एवं प्रा. नयना सी. पटेल 40-44
स्त्री विमर्श : पराकाष्ठा और भटकाव -डॉ. संजीव सिंह 45-48

नेपाली लोकप्रिय आख्यान -योगेश पंथ 49-52
'रागदरबारी' का भाषिक और सामाजिक विश्लेषण की दृष्टि से एक अध्ययन -आशा मीणा 53-60

तुलसीदास -डॉ. मुकुल खण्डेलवाल 61-63
जनकवि कमल किशोर श्रमिक का रचना संसार -डॉ. प्रभा दीक्षित 64-71

'सफर के लिए रसद' होने की कामना करती निर्मला गर्ग -डॉ. राधा वर्मा 72-78
मानव-मूल्यों [जीवन मूल्यों] की अवधारणा और उसका साहित्यिक परिप्रेक्ष्य -अनामिका सिंह 79-82

नव सांस्कृतिक परम्परा : स्वातंत्र्योत्तर ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्य -प्रभाकान्त द्विवेदी 83-89
गुप्त सम्राटों के सिक्कों का क्रमिक सूक्ष्म मूल्यांकन -मनोज कुमार सिंह 90-94

सूर्योपासना का महत्वीय स्वरुप -खगेश नाथ गर्ग 95-99
हेफतालों के सिक्कों का अध्ययन -मनोज कुमार सिंह 100-102

विल्बर श्रॅमचे संप्रेषण प्रतिमान : शेनॉनच्या संप्रेषण प्रतिमानातील तुलनेच्या संदर्भासह -प्रा. विशाल आहेर 103-106
स्मृतिकालीन विधिक सिद्धान्त की प्रकृति -डॉ. रामानुज सिंह 107-109

संप्रेषण व संप्रेषण चक्र -प्रा. विशाल आहेर 110-114
भारत में कृषि विकास की चुनौतियाँ : बागवानी -सुनील चौधरी एवं प्रो. तपन चौरे 115-122

क्लॅऊड शेनॉनचे गणितीय संप्रेषण प्रतिमान -प्रा. विशाल आहेर 123-125
21 वीं शताब्दी में भारत-चीन सम्बन्ध : चुनौतियाँ एवं सुझाव -कमल किशोर 126-130

भारत में नये राज्यों की मांग और राष्ट्रीय एकीकरण की समस्या -कमल किशोर 136-139

মার্কসীয় নন্দন ও কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের কবিতার শিল্পচেতনা - তরুন কুমার মৃধা ১৪০-১৪৫
মহাশ্বতা দেবীর উপন্যাসে শোষিত আদিবাসী সমাজ ও তার জীবনচিত্র : -কৌশিকোত্তম প্রামানিক ১৪৬-১৫২

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777
भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2013) 7,140-145
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 5 फरवरी 2013

মার্কসীয় নন্দন ও কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের কবিতার শিল্পচেতনা

তরুন কুমার মৃধা*

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित मार्कसीय नन्दन ও कवि सुभाष मुखोपाध्यायेर कवितार शिल्पचेतना शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र का लेखक मैं तरुन कुमार मृधा घोषणा करता हूँ कि लेखक के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेता हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देता हूँ। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देता हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देता हूँ।

জন্মার্জিত ও প্রচলিত পথে আমরা বিশ্বাস করে এসেছি মানুষের জীবন প্রশ্নাতীত ভাবে পরিচালিত হচ্ছে মানবিক ও দৈব যুক্তিতে। মানুষের যাবতীয় ধ্যান ধারণা, সাংস্কৃতিক প্রত্যয়, আইনব্যবস্থা, ধর্ম বিশ্বাস ঐ যুক্তির (দৈবী যুক্তি) সৃষ্টি। মার্কস এই বক্তব্যের নতুন অবধারণা তৈরী করে জানালেন--মানুষের সমস্ত চিন্তা-ভবিষ্যের শিকড় নিহিত রয়েছে মানুষ ও তার ক্রিয়াকলাপের অর্থাৎ, সমাজ ও মানুষের নিরন্তর সম্পর্কে; তা কখনো সংঘাতে, কখনও সম্মিলনে। আর এই সম্পর্কের মানক প্রধানত দুটি-- রাজনৈতিক পরিকাঠামো ও অর্থনৈতিক চরিত্র। এই দুই-এর যোগসাজসে মানুষের সমস্ত ব্যবস্থা চালিত হচ্ছে-সেই মানুষের চিন্তা বা জীবনের সব ক্ষেত্রে। সে যেমন সমাজ সত্তার ক্ষেত্রে তেমনই মানব চিন্তার অধিসংগঠন(superstructure) বা অবসংগঠন(base) সবক্ষেত্রে। তাই সাহিত্য, শিল্প ও সমস্ত ভাবাদর্শ সমাজ সত্তারই অর্ন্তনিবিড় প্রতিফলন। সাহিত্য শিল্পকে এই সমাজ সত্তা অতিরিক্ত বিমূর্ত কোন চিন্তার মানকে দেখার বা মানব চৈতন্যের বিশেষ এক স্তরে(কখনও বা দৈবী প্রতিভা-কল্পনা) দেখার যে প্রকল্প তৈরী হয়েছিল, সেই চিন্তণ-প্রকরণ কে তুচ্ছ করে শিল্পকে বিপুল মানব বিশ্বের সূক্ষ্ম ব্যপক নিরন্তর অন্যোন্য সম্পৃক্ত(দ্বান্দ্বিক/dialectical) সজ্ঞান বলে প্রতিস্থাপিত করলেন মার্কস। ধনতান্ত্রিক বিশ্বে মানুষ নিয়ত সমাজের শোষণে বঞ্চনায় আপন সত্তা থেকে বিচ্যুত বিচ্ছিন্ন নির্বাসিত হয়ে খুঁজে নেয় কাল্পনিক অদৃশ্য সত্যের(দৈবী চেতনার অবধারণা) জগৎ। সেই অদৃশ্য জগতের কল্পনায়, বিশ্বাসে তার শিল্পে কল্পনার অধিমানসিক সংজ্ঞান তৈরী হয়। মার্কস সেই দর্পণের প্রতিবিম্ব প্রচ্ছদ ভেঙ্গে দিয়ে বাস্তবের শিকড় মাটিতে, সামাজিক ন্যায়ের প্রতিমানে শিল্পের বিষয়-সত্তা নির্মাণের বিধি তৈরী করলেন। মার্কসের কাছে শিল্পের আদর্শ তাই গণ্য হল--সমাজ ও সমাজ সত্তার অবধারিত অংশ রূপে মানুষ। মানুষই অবধারিত স্বীকরণে শিল্পের বাচ্য হয়ে উঠল। সমাজ ও মানুষের পারস্পরিক ক্রিয়া-দ্বন্দ্বের ইতিহাস সাহিত্যে অন্তর্ধৃত হল। মানব চৈতন্যের বিশেষ স্তরের ভাবনায় মানব বিবেকী-অতিরিক্ত জড়-কাল্পনিক আদর্শের অবভাষে শিল্পের যে নিরীক্ষা-এই তত্ত্বজ্ঞানকে নসাৎ করে শিল্পের বাস্তব, সমাজ-সম্পৃক্ত প্রজ্ঞান-ভাষ্য রচিত হল। সাহিত্য শিল্পে সমাজসত্তার, সময় ও পরিসরের বিন্যাস আয়ত্ত হল। সামাজিক পুঙ্খানুপুঙ্খতার আবহে ,সময় বিবেকের আধিত্যে শিল্পের নন্দন হয়ে উঠল মানুষ,মানুষের ভাবনা বিশ্ব, মানুষের নিরন্তর ক্রিয়াকলাপে সমাজের সঙ্গে তার যে সম্পর্ক--তা যেমন বর্তমানের ঋদ্ধতায়, তেমনই ঐতিহাসিক ক্রম থেকে আগত ভবিষ্যের বাচ্যতায়। এবং তা, যথাপূর্ব ঐতিহাসিক চিন্তনে-যুক্তির পথে, বিবেকের সৌষাম্যে। নিরর্থক অযৌক্তিক কোন ভাবকল্পের আকরণে নয়। মানুষকে যা কিছু মানবিক বিবেক থেকে নির্মূল করে দেয় তার বিরুদ্ধে প্রতিরোধ গড়ে তোলবার যে ভাবাদর্শ, যে নন্দন তাই শিল্পের বাচ্য।চিন্তার এই

*গবেষক, বাংলা বিভাগ, কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়

© लेखक 2013, एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

পরিকাঠামোয় শিল্পের আর্দশ নির্মাণের বৈধতায় মার্কসীয় শিল্প সংস্কৃতির প্রকরণ কৌশল হল-সময় ও সমাজের মানুষ ও বিশ্বের সযত্ন প্রকল্প হৃদ্যতার আত্যন্তিক বিশ্লেষনে,পুঙ্খানুপুঙ্খ সুচারুতায় বিষয়ের নিরীক্ষায়। সমালোচক G.S Fraser এই মর্মে মার্কসীয় শিল্পধর্মের প্রকরণ বাচ্যতার বিশেষত্ব নির্ধারণ করলেন--''Communist poetry requires a use of the symbolism of the great sufferings masses:rather it does not requires symbolism or allygory at all but a direct appeal to the masses, a direct praise of them and a tone of practical exhortation, a direct description of their activities and sufferings. And it must not be cryptical or illusive or obscure, it must make no cultural demands on the masses that would give them a sense of inferiority or weaken them in the struggle''(G.S Fraser,'The Modern Writers And His World'New York, Oxford University Press.1986,p.128) । কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের কবিতা বিশ্ব এই ভাবনা নিরিখেই বিচার্য। সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের কবিতার এই নান্দনিক নিরীক্ষা বিচারের পূর্বে জেনে নেব কবির জীবন ইতিহাসের খানিকটা সালতামামি। কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায় পদাতিক কবি নামেই খ্যাত।'পদাতিক'কবি যাত্রা শুরু করেছিলেন ১৯৪০ এ 'পদাতিক' কাব্য সংকলনের ঝড় তোলা উজানে। আর যাত্রা সমাপ্ত করেছিলেন মৃত্যুর পরে প্রকাশিত 'নতুন কবিতার বই'(২০০৯) সংকলনের মাধ্যমে। সব মিলিয়ে পনের খানা কাব্য সংকলন তাঁর কলমে প্রকাশিত হয়েছিল।

কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায় জন্মেছিলেন কৃষ্ণনগরে মাতুলালয়ে ১৯১৯ এ। পিতা আবগারী বিভাগের চাকরী করতেন। বাবার চাকরী সূত্রে কবির ছেলেবেলা কাটে ভ্রামনিক। পড়াশুনা শুরু হয় উত্তরবঙ্গের নওগার শহরের স্কুলে। পরে কলকাতার মেট্রোপলিটন স্কুল ও ভবানীপুর মিত্র ইনস্টিটিউশনে। ভবানীপুর মিত্র ইনস্টিটিউশন থেকে ম্যাট্রিকুলেশন পাশ ১৯৩৭ এ। ১৯৩৭-১৯৩৯ আশুতোষ কলেজে আই.এ. এবং ১৯৩৯ এ স্কটিশচার্চ এ দর্শনে অনার্স নিয়ে বি.এ ক্লাসে ভর্তি হন। ভবানীপুর মিত্র ইনস্টিটিউশনে ম্যাট্রিক পড়বার সময়েই তাঁর কাব্যচর্চার হাতে খড়ি হয়। আশুতোষ কলেজে পড়াকালীন কাব্যচর্চা জোর পায়। ১৯৪০ এ স্কটিশচার্চে পড়ার সময়ে কবির প্রথম কবিতা সংকলন 'পদাতিক'-এর প্রকাশ। প্রথম কাব্য সংকলন প্রকাশের সঙ্গে সঙ্গে বাংলা সাহিত্যে সাড়া পড়ে যায়।

কবি সুভাষ কৈশোর যৌবনের সন্ধিলগ্নে যে স্বপ্নে আবিষ্ট হয়েছিলেন, সেই স্বপ্নের লৌকিক নাম মার্কসীয় সাম্যবাদ। এই মার্কসীয় সাম্যবাদ কবি জীবনের মূলপর্বের ধ্যানমন্ত্র। কবি চেতনার স্বরূপ গঠিত হয়েছিল এই ধ্যান মন্ত্রে।১৯৩৭-১৯৩৯ এ আশুতোষ কলেজে পড়বার সময় হাতেখড়ি হয় মার্কসবাদে । কলেজের বলশেভিক ছাত্র নেতা বিশ্বনাথ দুবের মাধ্যমে এই প্রাথমিক পর্ব সমাধা হয়। বিশ্বনাথ দুবের মাধ্যমে প্রথমে লেবার পার্টির সদস্য হন(বলশেভিক পার্টির প্রকাশ্য সংগঠন লেবার পার্টি)। পরে ১৯৩৯ এ কমিউনিষ্ট পার্টির এক ছাত্র নেতা বিশ্বনাথ মুখার্জীর মাধ্যমে হন কমিউনিষ্ট পার্টি সদস্য। তবে মার্কস-এঙ্গেলের পাঠ শুরু করেন ঐ বিশ্বনাথ দুবের মাধ্যমেই । এই সময়ে সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের জীবনে কবিতা ও রাজনীতি সমতালে শুরু হয়। ১৯৪২ এ পার্টির মূল সদস্যপদ পান এবং ১৯৪৩ খ্রীঃ পার্টির সর্ব সময়ের কর্মী হন। ১৯৪৩ এ গড়ে উঠলো ''ফ্যাসি বিরোধী লেখক ও শিল্পী সংঘ''। কবি বিষ্ণুদের সঙ্গে যুগ্মভাবে হলেন সংঘের যুগ্ম সম্পাদক। পরে এই প্রতিষ্ঠানের নাম বদলে হল 'প্রগতিশীল লেখক ও শিল্পী সংঘ'।সুভাষ মুখোপাধ্যায় হলেন এর অন্যতম প্রধান সংগঠক। কিছুদিন বাদে মাসিক পনের টাকা ভাতার সর্বক্ষণের কর্মীরূপে 'জনযুদ্ধ' পত্রিকায় যোগদান করেন। ১৯৪৬ এ দৈনিক 'স্বাধীনতা' পত্রিকার সাংবাদিক হয়ে আসেন। ১৯৪৮ এ কমিউনিস্ট পার্টি বে-আইনী ঘোষিত হলে, বহু কমিউনিস্ট কর্মীর সঙ্গে কবিও কারাবরণ করেন। ১৯৫০ এর নভেম্বরে কারামুক্তি ঘটে।

জেল থেকে ফিরে দেখা দেয় প্রচন্ড আর্থিক দুরাবস্থা। মাত্র পঁচাত্তর টাকা বেতনে একটি নতুন প্রকাশনা সংস্থায় সাব এডিটর হন। ১৯৫১তে পেলেন 'পরিচয়' এর সম্পাদনার দায়িত্ব। ঐ বছরেই গীতা বন্দ্যোপাধ্যায় সঙ্গে বিবাহ হয়। বিবাহের পর স-স্ত্রীক চলে আসেন বজবজের ব্যঞ্জনহেড়িয়া গ্রামের মজদুর বস্তিতে। মজুর সংগঠনের দায়িত্বে। সালটা ১৯৫২। এখানে এসে চটকলের মজদুরদের মধ্যে পার্টি সংগঠনের কাজ চালাতে থাকেন। থাকতেন একটি মাটির ঘরে। এরপরে চলে আসেন কলকাতার পোর্ট অঞ্চলে ট্রেড ইউনিয়নের কাজে। ১৯৬৪তে পার্টি ভাগ হলেও তিনি রয়ে গেলেন পুরোনো পার্টিতে। ১৯৬৭তে যুক্তফ্রন্ট ভেঙে দেওয়ার কারণে ২৪৪ ধারা ভঙ্গ করে দ্বিতীয়বার কারাবরণ করেন। ১৩দিনের কারাবাস। সত্তরের দশকে তাঁর রাজনৈতিক চিন্তাধারাতে পরিবর্তন আসে। নকশাল আন্দোলন সমর্থন করেন না বলে 'কে কোথায় যায়' উপন্যাস লিখে সেই অসমর্থনের সদর্থকতা জানিয়ে দিলেন। এরপর কবির রাজনৈতিক চিন্তার পরিবর্তন আসে।

আমরা দেখে নিলাম ১৯৭০ পর্যন্ত কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের রাজনৈতিক ও ব্যক্তি জীবনের মোটামুটি একটা নকশা। কিন্তু, কেন কবি সুভাষের জীবনে রাজনীতি(মার্কসীয়) প্রধান আশ্রয় হয়ে উঠল, কোন প্রেক্ষাপটে কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায় রাজনীতিকেই কাব্যের আদর্শ করে নিলেন? তিনি বলেন--'ঘোড়ার আগে গাড়ি নয়, সংগ্রামের আগে সংস্কৃতি নয়'--কেন কবিতা

চর্চার আগেও রাজনীতি- কোন দেশীয় ও আন্তর্জাতিক প্রেক্ষাপট কবিকে আলোড়িত করেছিল মার্কসীয় সাম্যবাদে। সুভাষ মুখোপাধ্যায় যখন ১৮\১৯ এর যুবক, ১৯৩৮-৩৯ এ দেশ তখন পরাধীন। স্বাধীনতার প্রশ্নে দেশ নেতারা স্পষ্টতঃ দ্বিখন্ডিত। নরমপন্থী গান্ধীবাদী গোষ্ঠী শুধু মাত্র রাজনৈতিক স্বাধীনতার বিশ্বাসী; আর এক অংশ চরমপন্থীরা, এঁরা রাজনৈতিক স্বাধীনতা অপেক্ষা অর্থনৈতিক স্বাধীনতায় বিশ্বাসী। এই অর্থনৈতিক স্বাধীনতার বার্তা এল সাগরপারের বিপ্লবের ধ্বনিতে(অবশ্যই রুশ বিপ্লব) আর সাম্যবাদী দর্শনের(অবশ্যই মার্কসবাদ) বাণীতে।

এদিকে আর্ন্তজাতিক মঞ্চে দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের দামামা বেজে উঠেছে। ১৯৩৫ এ প্রথম বিশ্বযুদ্ধের পর ভার্সাই সন্ধির মধ্যস্থতায় স্বীকৃত মৈত্রী চুক্তি মুসোলিনীর আবিসিনীয়া আক্রমণ, ১৯৩৫ এ স্পেনে নতুন করে গৃহযুদ্ধ ;প্রজাতন্ত্রের অবসান ও জেনারেল ফ্রাঙ্কোর ক্ষমতা দখলে একনায়ক তন্ত্রের সূচনা। ১৯৩৭ এ জাপানের চীন আক্রমণ, ১৯৩৮ এ হিটলারের অস্ট্রিয়া ও চেকোস্লোভাকিয়া আক্রমণ; ব্রিটেন,ফ্রান্স,জাপান ও ইতালীর মধ্যে কুখ্যাত মিউনিখ চুক্তি। ১৯৩৯ সালে রুশ জার্মান অনাক্রমণ চুক্তি ;হিটলারের পোল্যান্ড আক্রমণের সঙ্গে সঙ্গে দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের শুরু - এই ঘটনাবলী সেদিনের ভারতবর্ষে বিশেষ করে বাঙালী বুদ্ধিজীবী ছাত্র যুব গোষ্টীকে প্রভাবিত করেছিল। যেমন, সেদিন সুধীন্দ্রনাথ দত্তের 'পরিচয়' পত্রিকার মারফতে প্রকাশিত হতে থাকে ফ্যাসিবাদ বিরোধী নানা মতামত ও প্রবন্ধাবলী(এই পরিচয় এর পরে সম্পাদক নিযুক্ত হন সুভাষ মুখোপাধ্যায়)। কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায় তখন এর থেকে দূরে ছিলেন না। দেশীয় ও বিশ্ব রাজনীতির প্রতিটি স্পন্দন কবিকে আলোড়িত করেছিল। যেমন ১৯৩৭ খ্রীঃ ২১শে সেপ্টেম্বর জাপানী ফ্যাসিস্ট বাহিনী চীনের নানকিং ও ক্যান্টন শহরের উপর অবিরাম বোমা বর্ষণ শুরু করলে কংগ্রেস সভাপতি জহরলাল নেহেরু ২৬শে সেপ্টেম্বর দেশের সর্বত্র চীন দিবস পালনের ডাক দিলেন। চীনের সর্মথনে সেদিন সমগ্র দেশ জুড়ে জাপ বিরোধী তীব্র বিক্ষোভ ও আন্দোলনে ফেটে পড়ে। স্কটিশচার্চ কলেজের তরুণ ছাত্র সেদিন কলম ধরলেন-

জাপপুষ্পকে ঝরে ফুলঝরি জ্বলে হ্যাঙ্কাও
কমরেড আজ ব্রজ কঠিন বন্ধুতা চাও
লাল নিশানের নিচে উল্লাসী মুক্তির ডাক
রাইফেল আজ শত্রুপাতের সন্মান পাক।

(চীন১৯৩৮\পদাতিক)

গান্ধীজীর অহিংস বুলি, সত্যাগ্রহকে আর্দশ করে 'স্বরাজ'এর (dominion status) নামে বারবার ইংরেজ প্রভুর দারস্থ হওয়া, সেদিন বহু বিপ্লবী বুদ্ধিজীবির মত কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায় ও সঠিক আদর্শ বলে মনে করেননি। তাঁর কলম সেদিন ব্যঙ্গের কষাঘাতে প্রতিবাদে মুখর হয়েছিল-

ফাল্গুন অথবা চৈত্রে বাতাসেরা দিক বদলাবে।
কথোপকথনে মুগ্ধ হবে দুটি পাশ্ববর্তী সিঁড়ি,-
'অবশ্য কতর্ব্যনীড়' (মড়া কাটা ঘর-স্থানাভাবে?)
নখাগ্রে নক্ষত্রপল্লী, ট্যাঁকে টুকরো অর্ধদগ্ধ বিড়ি।
মাংসের দুর্ভিক্ষ নইলে ঋষিমন হত হাব ভাবে ।
বিকৃত মস্তিষ্ক চাঁদ উল্লাঙুল স্বপ্নে অশরীরি ।
বিকেলে মসৃণ সূর্য মুর্চ্ছা যাবে লেকে প্রত্যহ।
মন্দভাগ্য বার্সিলোনা রেস্তোরাঁতে মন্দ লাগবে না।
সাম্য অতিখাশা চিজ! অনুচিৎ কিন্তু রাজদ্রোহ!

(নির্বাচনিক\পদাতিক)

পদাতিকের বহু কবিতায় গান্ধীজীর অহিংস আবেদন নিবেদনের নীতিকে সমালোচনা করেছেন এরূপ ব্যঙ্গের কষাঘাতে,(যেমন-নারদের ডায়ারি, কানামাছির গান, আদর্শ, অতঃপর, পদাতিক ৪ নং প্রভৃতি কবিতা)। আর বাংলা কবিতাও প্রথম স্পস্টতঃ রাজনীতির ছত্রছায়ার প্রাণপ্রাচুর্যে মুখর হয়ে উঠল এবং তা সাম্যবাদী আর্দশের মহনীয় আনুগত্যে। শুধু আবেগের উচ্ছ্বাস্ নয়, হৃদয়ের গ্রন্থি দানা বেঁধে উঠছিল,সংহতির শৌর্য লাভ করেছিল সেদিন কোন রাজনৈতিক দর্শনকে আধার করে,সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের কবিতা তারই উজ্জ্বল স্বাক্ষর।

কবি সুভাষ পদাতিকের প্রথম কবিতায় এই সাম্যবাদী আদর্শের সম্মিলিত সম্বেগ আহ্বান--

কমরেড় আজ নবযুগ আনবে না?
কুয়াশা কঠিন বাসর যে সম্মুখে।
লাল উল্কিতে পরস্পরকে চেনা-
দলে টানো হতবুদ্ধি ত্রিশঙ্কুকে,
কমরেড় আজ নবযুগ আনবে না?

(সকলের গান\পদাতিক)

পরবর্তী দ্বিতীয় কবিতায় ও এই আহ্বান ভাষা পেয়েছে আরো সুউচ্চ স্বরে--

প্রিয়, ফুল খেলবার দিন নয় অদ্য
ধ্বংসের মুখোমুখি আমরা,
চোখে আর স্বপ্নের নেই নীল মদ্য
কাঠফাটা রোদে সেঁকে চামড়া
চিমনির মুখে শোনো সাইরেন সঙ্খ
গান গায় হাতুড়ি ও কাস্তে,
তিল তিল মরণেও জীবন অসংখ্য
জীবনকে চায় ভালোবাসতে।
প্রণয়ের যৌতুক দাও প্রতিবন্ধে,
মারণের পণ নখদন্তে
বন্ধন ঘুচে যাবে জাগবার ছন্দে;
উজ্জ্বল দিন দিক্ অন্তে।
শতাব্দী লাঞ্ছিত আর্তের কান্না
প্রতি নিঃশ্বাসে আনে লজ্জা;
মৃত্যুর ভয়ে ভীরু বসে থাকা,আর নয়
পরো পরো যুদ্ধের সজ্জা ।

(মে দিনের কবিতা)

বাংলা কবিতা এভাবে নতুন স্বর; নতুন মিল বিন্যাস; নতুন ছন্দ-যজ্ঞে মন্দ্রমুখর হয়ে উঠল। বাংলা কবিতা আর এক নতুন দিগন্তের দায়বদ্ধতায় মেতে উঠল। এতদিন ধরে কবিতা কেবলই আর্টের দায়িত্ব পালন করে আসছিল। এবার সেই দায়িত্ব পালনের সঙ্গে সঙ্গে সমাজ মনস্কতায় দায়বদ্ধ হলো প্রবল ভাবে। অবশ্য এর পূর্বে সুধীন্দ্রনাথ,বিষ্ণু দে ,সমর সেনরা এই দায়িত্ব পালনে কিছুটা এগিয়ে এসেছিলেন,কিন্তু তা ছিল যথেষ্ট অস্পষ্ট ভঙ্গিতে, অনুচ্চারিত প্রায় বা অর্ধচ্চারিত। সুভাষ মুখোপাধ্যায়ে এসে কবিতা লক্ষ্মী সম্পূর্ণরূপে সামাজিক দায়িত্ব পালনে বদ্ধপরিকর হল। সুভাষের কবিতা তথাকথিত সৌন্দর্য বিলাসীদের মত রোমান্টিক আবহে মত্ত হয়ে প্রেমের তীর্থে মানস অভিযাত্রা করল না; বা নিসর্গের বন্দনায় সম্পৃক্ত হল না, বরং সমাজ-অভিজ্ঞানে ঋদ্ধ হল। তাই অধ্যাপক কবি বুদ্ধদেব বসু সেদিন ‘পদাতিক’এর এই তরুণ কবিকে সাদরে অভিনন্দন জানাতে ভূল করলেন না। তাঁর সম্পাদিত ‘কবিতা’ ত্রৈমাসিকে সেদিন পদাতিকের কবি সম্পর্কে সুদীর্ঘ প্রবন্ধ লিখে তার যথার্থ স্বীকৃতি জানালেন(পৌষ, ১৩৪৭-এর সংখ্যায়)।

সুতরাং বাংলা কবিতা আরো এক বিষয় সচেতনায়; নতুন বিষয় ভাবনায় ঋদ্ধ হল। এতদিন প্রকৃতি প্রেম রোমান্টিকতার আবহে বিভোর ছিল কবিতা। কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায় সেই সাধনায় ছেদ টানলেন। বাংলা কবিতা জেগে উঠল একেবারে নতুন ভোরে। রাজনীতি আর সমাজনীতির যুগপৎ সম্মিলনে। এতদিন কবিতা রোমান্টিকতার কারিগরি আর মজুরদারীতে ব্যস্ত ছিল,এবার কবিতা এই সবকে ছাড়িয়ে সমাজ আর্দশের মন্ত্র যাপনের যাজ্ঞিক হল। বাংলা কবিতার জন্মান্তর হল। বিষয় সচেতনায় নতুন ভুবনের দরবার করল। নতুন বিষয় উচ্চারণের সঙ্গে উপযোগী ভাষা,ছন্দ,অলংকার ও সে আয়ত্ত করে নিল। সুভাষের কবিতায় তাই নতুন বিষয়(context)সঞ্জননের(creation)সঙ্গে সঙ্গে উপযোগী আঙ্গিক-কৌশল(form/style)ও অর্জন করে নিল, যেন হর-গৌরীর নিত্যত্বে।

আঙ্গিকগত অভিনবত্বে ছন্দের কথাই বলা যাক। সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের ছন্দের বিশেষত্ব অসম্ভব গতির জাড্যতা তাঁর কবিতার চরণে। বিশেষ করে প্রথম তিন কাব্যগ্রন্থে। দ্বান্দ্বিক বস্তুবাদকে সাহিত্যচর্চার আর্দশ রূপে গ্রহণ করবার ফলে, দ্বান্দ্বিক বস্তুবাদের গতিধর্ম যেন ছন্দের শাসনে শাণিত। লালিত আর্দশের বৈপ্লবিক গতিবাদ কবির কবিতাতেও যেন অন্তর্নিবিষ্ট হয়ে আছে। যেমন ভাবে রবীন্দ্রনাথ বেঁর্গসের ‘elen vital’ তত্ত্বকে কাব্যরূপ দেওয়ার ফলে ‘বলাকা’-য় এল ‘হেথা নয় হেথা নয়/অন্য কোথা অন্য কোনখানে’--এই মুক্তির মন্ত্র গতির মন্ত্র। যার ফল ‘বলাকা’-র মুক্ত ছন্দ। সুভাষ মুখোপাধ্যায়ও যেন মার্কসীয় বৈপ্লবিক আদর্শের গতিধর্মকে কাব্যের চরণে চরণে অনুরণিত করেছেন। একটু তুলনা করলেই দেখা যাবে। জীবনানন্দের কাব্য প্রকৃতিনিষ্ঠ; মনন বোধির সূক্ষ্ম চেতনা-অবচেতনার ইতিবৃত্তে; তাই জীবনানন্দ গ্রহণ করেছেন বা কবিতায় অন্বিত হয়েছে ধীর লয়ের মিশ্রবৃত্ত ছন্দ। জীবনানন্দের যেকোন কবিতাকে গ্রহণ করলে এ সাক্ষ্য মিলবে-

‘‘শুয়েছে ভোরের রোদ ধানের উপর মাথা পেতে’
অলস গেঁয়োর মতো এইখানে কার্তিকের ক্ষেতে;
মাঠের ঘাসের গন্ধ বুকে তার,-চোখে তার শিশিরের ঘ্রাণ,

তাহার আস্বাদ পেয়ে অবসাদে পেকে ওঠে ধান,
দেহের স্বাদের কথা কয়,-
বিকেলের আলো এসে (হয়তো বা) নষ্ট ক’রে দেবে তার সাধের সময়।’’

(অবসরের গান/ধূসর পান্ডুলিপি)

অথবা,

ধানসিঁড়ি নদীর কিনারে আমি শুয়ে থাকবে-ধীরে পউষের রাতে-
কোন দিন জাগবো জেনে
কোন দিন জাগবোনা আমি -কোন দিন আর।

(অন্ধকার/বনলতা সেন)

বা,

ফাল্গুনের অন্ধকার নিয়ে আসে সেই সমুদ্রপারের কাহিনী,
অপরূপ খিলান ও গম্বুজের বেদনায় রেখা,
লুপ্ত, নাসপাতির গন্ধ,
অজস্র হরিণ ও সিংহের ছালের ধূসর পান্ডুলিপি,
রামধনু রঙের কাঁচের জানালা,
ময়ূরের পেখমের মতো রঙিন পর্দায় পর্দায়
কক্ষ ও কক্ষান্তরে থেকে আরো, দূর কক্ষ ও কক্ষান্তরের
ক্ষণিক আভাস-
আয়ুহীন স্তব্ধতা ও বিস্ময়।

(নগ্ন নির্জন হাত/মহাপৃথিবী)

জীবনানন্দের তিনপর্বের তিনটি কবিতা নিলাম।এর যে গতি বিশেষত্ব, এর পাশে যদি রাখা যায় সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের পদাতিক-চিরকূট পর্বের যে কোনো কবিতা যেমন পূর্বে উল্লিখিত পদাতিকের ‘মে-দিনের কবিতা’র কথাই যদি বলা যায় কবিতাটিতে অসম্ভব গতির বিশেষত্ব লক্ষ্য করা যাবে। জীবনানন্দেরই অনুসরণে মিশ্রবৃত্তের রীতিতে পদাতিকের নিম্নোক্ত কবিতাটিতে যদি লক্ষ্য করি-

উঞ্ছজীবী ডাস্টবিন নির্জন ব’লেই
অনেক আগ্নেয় রাত্রে নিষিদ্ধ আমরা
দেখেছি বৈষ্ণব বেনে অকৃপণ হাত দেয় পণ্যযুবতীকে।
অবশ্য নেপথ্যে চলে নিরামিষ নাচ আর গান
কখনো নিষ্ঠুর হাতে তারা কিন্তু মারেনাকো মশা একটিও
(আমরা কয়েকটি প্রাণী দুচোখে ঘুমের হরতাল।)
মাঝে মাঝে শোনা যায়, ভবঘুরে কুকুরের ঠোঁটে
নতুন শিশুর টাটকা রক্তিম খবর।

স্পষ্ট উপলব্ধি হচ্ছে, জীবনানন্দের কবিতা থেকে এ কবিতার গতি অনেক বেশী। কবিতার গতি নির্ণয়ের যদি যন্ত্র আবিষ্কৃত হতো তাহলে স্ট্যাটিস্‌টিক্যালি তা পরিমাপ করা যেতো অবশ্যই। কথা এই, কেন পদাতিকের কবির কবিতায় এত গতিধর্ম। একটু ছন্দগত নিরীক্ষায় দেখি তাহলে স্পষ্ট হবে-জীবনানন্দের কবিতার চরণে যত বেশী মুক্তস্বরের(মুক্তদল) আধিক্য,সেই তুলনায় পদাতিকের কবি অধিকমাত্রায় রুদ্ধদল গ্রহণ করেছেন। কবিতা চরণে যখন মুক্তস্বরের আধিক্য থাকে, তখন একটানা অবাধ গতিতে ছন্দ(কবিতার গতি) চলতে থাকে। মুক্তস্বরের উচ্চারণ আনুভূমিক (horizontal) ভাবে সম্প্রসারিত হওয়ার কারণে। ছন্দ গতির চলন হয় সরলরৈখিক,একটা সুরেলা ধ্বনির আবহ চলতে থাকে (যেমন আ-------)। আর কবিতা চরণে মুক্তস্বরের পাশে বা মাঝেমাঝে যদি রুদ্ধদলের প্রতিবাদ আসে , তবে মুক্তস্বর চলতে চলতে রুদ্ধদলে প্রতিহত হয়ে তারস্বরে বেজে ওঠে। মুক্তস্বরের শনন কে স্পষ্ট করে। কারণ মুক্তস্বর যেখানে আনুভূমিক বিশেষত্বে চলে রুদ্ধস্বর সেখানে উলম্ব ভাবে(vertically)। রুদ্ধদলের কোন চলার ধর্ম নেই; মুক্তস্বর ছাড়া সে মৃত, প্রাণ হীন। কবিতার চরণে যখন মুক্তস্বর অবাধ গতিতে চলতে চলতে রুদ্ধদলের প্রতিঘাত পায় তখনই মুক্ত দলই তীব্রগতিতে বেজে ওঠে। পদাতিকের কবির ছন্দ বিশেষত্ব এখানেই- যুক্তব্যঞ্জন যুক্ত বা যুগ্মধ্বনি যুক্ত শব্দের ব্যবহারে কবিতার ছন্দকে পর্বে পর্বে (এই যুগ্মধ্বনি জনিত রুদ্ধদল দ্বারা) বাজিয়ে তুলেছেন। তাই পদাতিকের কবির ছন্দের এত তাল ঝংকার, এত সুর ঝংকার । জীবনানন্দ মুক্তদলের আধিক্য দেওয়ায় কবিতার গতি এক পংক্তি থেকে আর এক পংক্তিতে চারিত হয়েছে। একটা সরল ধীর মন্থর চলমান গতি জাড্যতা লাভ করেছে। তাই জীবনানন্দের প্রায় সব কবিতায়

গীতিসুরে আশ্রয় দেওয়া সম্ভব।যেমন রূপসী বাংলা বা বনলতা সেন কাব্যের বহু কবিতাকে শিল্পী লোপামুদ্রা মিত্র অসম্ভব সুন্দর সুর মাধুর্যে জাগিয়েছেন।

এবার কথা কেন পদাতিকের কবির ছন্দো মাধুর্যে এত গতি। পূর্বেই বলা হয়েছে মার্কসীয় গতির ধর্ম কবির চেতনাকেই প্রভ্যবিত করেছে। স্বাভাবিক ভাবে সেই গতির ধর্ম শিল্পীর জীবন ধর্ম থেকে শিল্প সত্তায় সম্প্রসারিত হয়েছে। এক্ষেত্রে মনে পড়বে মনস্তত্ত্ববিদ্ Wood Hoffer Man এর কথা Hoofer Man মানুষের চেতনার বিশেষত্ব সম্পর্কে জানাচ্ছেন-- ‘‘every materical conference evaluate to human nerve system and as well as it impressed and feauturate to this outstanding activities’’(‘Human beinges his activities and motivation`1969,Orient Longman, p:232)। মানব চেতনায় পার্থিব জগতের ক্রিয়াকলাপের প্রতিটি মুহূর্তের প্রতিচ্ছায়া নিবেশিত থাকে,বলেই কোনো এককালে ঘটে যাওয়া বিষয়কে বহু পরে হলেও তার চেতন স্তরে এসে প্রতিফলকের মতো নানা আলোছায়া ফেলে। শিল্প ও সেই ক্রিয়াকলাপের প্রতিফলন।

সুতরাং কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায় কবিতায় নতুন বিষয় অধীত করবার সাথে সাথে, বাংলা কবিতাও আর এক নতুন দায়বদ্ধতায় স্বীকৃত হয়ে উঠল। কবিতার নতুন সঞ্জননের (creation) সঙ্গে সঞ্চারনের (communication) নতুন দ্বার উন্মোচিত হল। এতদিন বাংলা কবিতা ছিল শুধু সৌন্দর্যবিলাসীর পাঠ্য, কিন্তু এখন বাংলা কবিতা আমজনতার দিগন্তে সম্প্রসারিত হল , অর্থাৎ বাংলা কবিতার নতুন সঞ্জনন ক্রিয়ার সাথে সঙ্গাপন ক্রিয়ার দিগন্ত সম্প্রসারিত হল (new creation and correspondence of art)।

কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায় কবিতা চর্চায় তাই তিনটি প্রধান দায়িত্ব পালন করে গেলেন ঃ প্রথমত, কবিতার বিষয় ভাবনার নতুনত্ব; দ্বিতীয়ত,নতুন বিষয় ভাবনার সঙ্গে উপযোগী কলা কৌশল আবিষ্কার; আর তৃতীয়ত, কবিতার সঞ্চারণ ক্রিয়ার সম্প্রসারণ। এইভাবে বাংলা কবিতা নতুন দিগন্তের উন্মোচন ঘটাল,কবিতার সংজ্ঞা পরিবর্তিত হল; সৌন্দর্যের সংজ্ঞা পরিবর্তিত হল। বাংলা কবিতা নতুন ‘চরৈবেতি’ মন্ত্র পেল কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের কলমে।

लेखकों के लिए निर्देश

शोधपत्र का अनुरोध

लेखक अपना शोधपत्र डॉ. मनीषा शुक्ला ,प्रधान सम्पादिका आन्वीक्षिकी भारतीय शोध पत्रिका को ई-मेल पर प्रेषित करें। (maneeshashukla76@rediffmail.com)

प्राप्त शोधपत्र पत्रिका में प्रकाशन के पूर्व पुनर्निरीक्षित किये जायेंगे। स्वीकृत शोधपत्र कहीं और प्रकाशित नहीं होना चाहिए और न ही उस शोधपत्र का कोई भी भाग प्रधान सम्पादिका के अनुमति के बिना कहीं और प्रकाशित किया जा सकता है। कृपया अपने शोधपत्र की पाण्डुलिपि निम्न भागों में तैयार करें,शीर्षक ;सारांश ;पाण्डुलिपि ;पुस्तक संदर्भ सूची। कृपया पुनर्निरीक्षण की गुणवत्ता में सहायता करने हेतु अपना नाम पता पाण्डुलिपि पर न दें।

शीर्षक :शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवश्य दें,किन्तु अपना पूरा नाम,पता,संस्था जहाँ पर अध्ययन अथवा अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, आपका विषय,दूरभाष अथवा मोबाइल,फैक्स,ई-मेल पत्राचार हेतु अलग पृष्ठ पर अवश्य दें। उपर्युक्त तथ्य आपके शोधपत्र के शब्द सीमा के अन्तर्गत ही माना जायेगा।

सारांश :कृपया शोधपत्र का सारांश 120 शब्दों में दें।

पाण्डुलिपि :इसके अन्तर्गत मुख्य पाठ्य सामग्री होगी ; जो 5 से 10 पृष्ठ तक होनी चाहिये। शोधपत्र 10 पृष्ठ से (सारांश,शब्द संक्षेप,संदर्भ सूची समेत)अधिक प्रकाशन हेतु स्वीकार नहीं किया जायेगा। अन्यथा वृहद् शोधपत्र(10 पृष्ठ से अधिक) प्रकाशन में देर भी हो सकती है। लेखक को यह बात स्वीकार होनी चाहिए कि शोधपत्र पुनर्निरीक्षण के दौरान किये गये संशोधन उन्हें मान्य होंगे। शोधपत्र प्रकाशन के दौरान त्रुटि की सम्भावना न बने इसका पूरा ध्यान रखा जाता है फिर भी कोई त्रुटि पाये जाने पर लेखक संशोधित रीप्रिंट प्राप्त कर सकता है ; पत्रिका में संशोधन की व्यवस्था नहीं है।

सन्दर्भ वर्णमालाक्रामानुसार :शोधपत्र के समापन पर कृपया संदर्भ वर्णमाला क्रमानुसार दें। पत्रिका का वर्ष,लेखक, पृष्ठ संख्या,भाग इत्यादि विस्तार से दें। पुस्तक शीर्षक या पत्रिका शीर्षक इटालिक दें।

पुस्तक :प्रकाशक का नाम,संस्करण संख्या,प्रकाशन वर्ष,लेखक का नाम,पुस्तक का नाम,पृष्ठ संख्या

पत्रिका :पत्रिका का नाम,लेख का शीर्षक,लेखक का नाम,प्रकाशक का नाम,अंक संख्या/माह,वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक अथवा मासिक जो भी हो स्पष्ट करें।

समाचार पत्र :प्रकाशक,तिथि,सन् ,पृष्ठ संख्या,

इण्टरनेट :वेबसाइड,पृष्ठ संख्या,मुख्य शीर्षक,अन्त: शीर्षक।

मानचित्र एवं सारणी :मानचित्र एवं सारणी अथवा चित्र शोधपत्र की समाप्ति के अन्त में दें। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट ही होना चाहिए। इसका स्पष्ट संकेत पाण्डुलिपि में दें(उदाहरण सारणी संख्या 1)

विशेष :कृपया अपना शोधपत्र ई-मेल करने के बाद डॉक से अवश्य भेजें। अपने शोधपत्र के साथ-साथ अपना वायोडाटा, फोटो,स्वपता लिखा लिफाफा(25 रू के टिकट सहित)भेजें। शोधपत्र यदि हिन्दी भाषा में है तो ए.पी.एस प्रियंका रोमन(ए.पी.एस. कार्पेरिट 2000++)में तैयार सी.डी के साथ दें। शोधपत्र प्राप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर लेखक को स्वीकृति पत्र प्रेषित कर दिया जायेगा। ई-मेल से प्राप्त शोधपत्र हेतु ई-मेल से स्वीकृति भेजी जायेगी। शोधपत्र प्रेषित करने के पूर्व प्रधान सम्पादिका से दूरभाष पर अवश्य सम्पर्क करें। सम्पादक मण्डल अथवा सलाहकार समिति में सम्मिलित करने का अंतिम निर्णय संस्था का होगा।

सदस्यों से निवेदन है कि वर्ष में 20 सदस्य पत्रिका से जोड़कर संस्था का सहयोग करें।

IJRA

www.onlineijra.com

ISSN 0973-9777

09739777

₹ 1200/-